HINDI

- मोर का चित्र बनाते हुए उसके पंख में स्वरों की मात्राओं का एक-एक शब्द लिखिए।
- शाम के समय पार्क में जाकर वहाँ की किन्ही 5 वस्तुओं के नाम लिखिए व संबंधित चित्र भी चिपकाइए।
- पक्षियों को पिंजरे में क्यों नहीं रखना चाहिए , पाँच वाक्यों में बताइए तथा आजाद पक्षी और पिंजरे में बंद पक्षी का चित्र बनाइए।
- संलग्न कविताओं के पीडीएफ से अपने सदन के अनुसार कविता याद करें।

नहीं सुनाई नानी मुझे कहानी

बीटा सदन

हुए चार दिन नहीं सुनाई, नानी मुझे कहानी।

चिड़ियों वाली आज सुना दो, कैसे खातीं खाना।
दाँत नहीं फिर भी चब जाता, कैसे चुनका दाना।
कैसे घूँट चोंच में भरती, कैसे पीतीं पानी।

कैसे छुपा बीज धरती में, पौधा बन जाता है।
दिन पर दिन बढ़ते-बढ़ते वह, नभ से मिल आता है।
बिना थके दिन रात खड़ा वह, कैसे औघड़ दानी।

सुबह-सुबह से सूरज कैसा, दुल्हन-सा शर्माता।
किन्तु दोपहर होते ही क्यों, अंगारा बन जाता।
मुंह सीकर क्यों खड़ी हो नानी, कुछ तो बोलो वाणी।

नल की टोंटी में से पानी, बाहर कैसे आता।
बनकर धार धरा पर गिरना, कौन उसे सिखलाता।
घड़ों, मटकियों की नल पर क्यों, होती खींचातानी?

वर्षा रानी।

डेल्टा सदन

आओ आओ वर्षा रानी

छम छम छम बरसाओ पानी।

धरती की तुम प्यास बुझाओ

लोगों के मन को हर्षाओ।।

बच्चे भी निकले हैं घर से

बूढ़े बैठे घर के अंदर डर के

मेंढक टर्र टर्र शोर मचाते।

अपने सुर में गीत सुनाते

कागज की नाव कहीं छतरिया।।

वर्षा की है सुंदर लड़ियाँ।

मोर नाच कर मन बहलाते

राष्ट्रीय पक्षी है कहलाते।।

इंद्रधनुष के रंग निराले

करते मनको है मतवाले।

वर्षा ऋतु ऋतुओं की रानी

आओ-आओ वर्षा रानी।।

गुरु महिमा। ओमेगा सदन

गुरु की महिमा निशि-दिन गाएँ,

हर दम उसको शीश नवाएँ।

जीवन में उजियारा भर लें,

अंधकार को मार भगाएँ।

सत्य मार्ग पर चलना बच्चों,

गुरुदेव हमको सिखलाएँ।

पर्यावरण बिगड़ ना पाए,

धरती पर हम वृक्ष लगाएँ।

पानी अमृत है धरती का,

बूँद- बूँद हम रोज बचाएँ।

सिर्फ जिएँ ना अपनी खातिर,

काम दूसरों के भी आएँ।

माता-पिता गुरु राष्ट्र की सेवा,

यह संकल्प सदा दोहराएँ।

बातें मानें गुरुदेव की,

अपना जीवन सफल बनाएँ।

नानी की कहानी

सिग्मा सदन

नानी की भी होगी नानी, उसकी भी तो होगी नानी।

पहली नाना नानी कौन थी भला, जिसने थी घड़ी कहानी।

सोचो होगी पहली नानी, कितनी बढ़कर ज्ञानी।

दुनिया देख रचे थे ढेरों, किससे महज जुबानी।

राजा-रानी सोनपरी, भालू सियार के किस्से,

भेड़ बकरियाँ, बाघ लोमड़ी उनके होते हिस्से।

हक की खातिर गौरैया, राजा से लड़ने जाती।

चतुराई बकरी की, शेर मियाँ को सबक सिखाती।

खुली आँख से आदिम नानी ने, देखी थी दुनिया।

तभी कहानी मीठी-मीठी, लगती है रस बुनिया।

प्यारी नानी! अपनी नानी, की दुनिया में जाओ।

चौकी और अनोखी, कथा-कहानियां में सुनाओ।

चिड़िया

गामा सदन

तिनके चुन कर लाती चिड़िया,

अपना निर्णय बनाती चिड़िया।

चाहे मुन्ना हो या मुनिया,

चाहे गुड्डा हो या गुड़िया।

घर घर की गौरैया बन कर

सबका मन बहलाती चिड़िया।

घर में वन में और फूलों पर,

डाली के हिलते झूलों पर

कभी फुदककर नाच दिखाती,

कभी गीत सा गाती चिड़िया।

इसको पिंजरे में मत डालो,

खुला छोड़ दो इसको पालों,

आजादी की खुली हवा में

अपने पर फैलाते चिड़िया।

कविता कद्दू जी की बारात

अल्फा हाउस

कद्दू जी की चली बरात,
हुई बताशों की बरसात!

बैंगन की गाड़ी के ऊपर
बैठे कद्दू राजा
शलजम और प्याज ने मिलकर
खूब बजाया बाजा!

मेथी, पालक, भिंडी, तोरी
टिंडा, मूली, गाजर,
बने बराती नाच रहे थे
आलू, मटर, टमाटर!

कद्दू जी हँसते-मुस्काते
लौकी दुल्हन लाए
कटहल और करेले जी ने
चाट पकौड़े खाए!

प्रातः पता चली यह बात,
सपना देखा था यह रात!